स्नेह और अनुशासन के बीच फँसी एक शिक्षिका

शिक्षिका श्रीमती प्रमिला चौहान से टुलटुल बिस्वास का साक्षात्कार

प्राथमिक स्कूल में पढ़ाने वाली शिक्षिका का यह साक्षात्कार एक आम व्यक्ति के शिक्षक बनने के सफ़र और शिक्षकीय ज़िन्दगी के खट्टे-मीठे अनुभव और उनकी समस्याओं व चुनौतियों को बयाँ करता है। सं.

यूँ तो संजय गाँधी विद्यालय माध्यमिक तक है, परन्तु इसमें प्राथमिक विद्यालय वाला भाग एक अलग (पुरानी) इमारत में लगता है। इमारत में दो कमरे हैं। एक कमरे में कक्षा पहली व दूसरी के विद्यार्थी पढ़ते हैं और दूसरे कमरे में कक्षा तीसरी व कक्षा चौथी के। पाँचवी कक्षा को स्कूल की मुख्य इमारत में एक कमरा दिया गया है– जैसे पाँचवीं के ये बच्चे ही प्राथमिक स्कूल में सबसे विशेष हैं। वैसे इसे इस तरह भी देखा जा सकता है कि पाँचवीं कक्षा (और उसकी शिक्षिका व उसमें पढ़ने वाले बच्चे) दरअसल इस स्कूल परिसर में मौजूद प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के दो अलग संस्थानों के बीच का पुल हैं। इसीलिए यह कक्षा माध्यमिक विद्यालय की तुलनात्मक रूप से नई, बड़ी और बेहतर इमारत में लगती है। बहरहाल, हम प्राथमिक स्कूल की कक्षाओं में लौटते हैं। इसके दोनों कमरे अच्छे खासे बड़े हैं– हालाँकि छत टीन का है। आसपास के विशालकाय पेड़ों के कारण ये कमरे दोपहर की धूप में भी उतने नहीं तपते जितनी उनसे अपेक्षा की जाती है। दोनों कक्षा-कक्ष में लकड़ी की चौड़ी बेंच और डेस्क की दो कतारें हैं। पहले कमरे की एक कतार में कक्षा तीसरी के बच्चे बैठते हैं, दूसरी में कक्षा चौथी के। इसी तरह दूसरे कमरे में एक कतार में पहली कक्षा के बच्चे बैठते हैं और दूसरी कतार में दूसरी कक्षा के।

पहले दिन जब मैं यहाँ सम्पर्क के लिए गई तो माध्यमिक विद्यालय के दफ्तर में प्राचार्या (कल्पना देसाई) से मेरी मुलाकात हुई। उन्होंने काफी सत्कार से मुझे बिठाया और बात की। एकलव्य और चकमक से वे परिचित थीं, इसलिए किसी शैक्षिक पत्रिका में शिक्षकों के साक्षात्कार के बारे में जानकर वे काफी खुश हुई, परन्तु समयाभाव के बारे में बताते हुए उन्होंने मुझे दो नाम सुझाए– श्री महेश अग्रवाल और श्रीमती प्रमिला चौहान। अग्रवाल जी किसी काम से स्कूल से बाहर थे, इसलिए उन्होंने एक बच्चे को बुलाकर मुझे चौहान मैडम के पास ले जाने को कहा। बच्चा मुझे लेकर चला तो अनायास ही उससे बातें होने लगीं। उसने बताया कि आज आठवीं के बच्चों का फेयरवेल है– इसलिए वह और उसके दोस्त (सातवीं के सारे बच्चे) जल्दी स्कूल आ गए हैं और तैयारियों में लगे हैं। हम स्कूल की इमारत से बाहर आकर बाजू की सँकरी गली से जाकर प्राथमिक स्कूल के कमरों में पहुँचे।

वह बालक मुझे पहले कमरे की दहलीज़ पर छोड़कर चला गया। कमरे में तीन शिक्षिकाएँ बैठी आपस में बातें कर रही थीं। साथ ही एक कुछ कॉपियाँ भी जाँच रही थीं और एक अन्य किसी रजिस्टर में कुछ जानकारी भर रही थीं। पूछने पर पता चला कि रजिस्टर में काम करने वाली शिक्षिका ही चौहान मैडम हैं। मैंने अपना परिचय दिया (एकलव्य और चकमक यहाँ भी महत्त्वपूर्ण परिचायक थे) और पत्रिका व शिक्षकों के साक्षात्कार के बारे में बताया। उन्होंने मुझे बिठाया और तफ़्सील से बात की। अपने बचपन, पढ़ाई, कार्य-जीवन के बारे में वे सहज ही बात करने लगीं। बीच-बीच में बच्चों को शोर करने से रोकने के लिए थोड़ी फटकार भी लगा देतीं, फिर बातों-बातों में उन्होंने कहा कि वे बोलने से ज़्यादा लिखकर अपने को अच्छी तरह व्यक्त कर पाती हैं, इसलिए उन्हें कुछ प्रश्न दे दिए जाएँ तो वे उनके उत्तर सोच-विचारकर लिखकर ला सकती हैं। तो, यह साक्षात्कार बहुत सारा प्रमिला जी के साथ बातचीत के ज़रिए और कुछ उनके लिखित जवाबों से बुना गया है। एक ऐसी शिक्षिका का साक्षात्कार जिनमें मैंने बच्चों के लिए स्नेह और सरोकार भी देखा और उन्हें अनुशासन में बाँधने की तीव्र जद्दोजहद भी।

सवाल : अपने बचपन व अपनी पढ़ाई-लिखाई के बारे में कुछ बताइए।

प्रमिला जी– मेरा जन्म नागपुर में बड़े परिवार में हुआ। परिवार में सारी सुख-सुविधाएँ थीं। मेरा लालन-पालन सम्पन्न घराने में हुआ है। मेरी प्राइमरी शिक्षा मिशनरी स्कूल में हुई। स्कूल में बहुत अधिक अनुशासन था। पढ़ाई पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता था। होमवर्क बराबर दिया जाता था। हमारे समय में नैतिक शिक्षा पर भी एक पीरियड रहता था। कक्षा में एकदम शान्ति रहती थी। मेरी अंग्रेजी शुरू से ही काफी अच्छी थी।

मेरी शादी लगभग 40 साल पहले महाराष्ट्र से भोपाल के पास के एक गाँव में हुई। यहाँ का वातावरण बिल्कुल अलग था। ससुराल गाँव में था और मैं नागपुर शहर में पली-बढ़ी थी। हमारा परिवार व्यापार में लगा था और यहाँ ससुराल में खेती-बाड़ी का काम होता था। सब कुछ अलग था। यहाँ पढ़ाई-लिखाई का बहुत ज़्यादा महत्व नहीं समझा जाता था। हर बात में 'पटेलों की बहू' होने की ज़िम्मेदारी निभानी पड़ती थी। उस समय मैंने बहुत संघर्ष किया। मेरी आगे पढ़ने की रुचि और टीचर बनने की इच्छा का यहाँ बहुत मोल नहीं था, पर मेरे पति ने हमेशा मेरी मदद की। मेरा सहयोग किया। वे शिक्षा विभाग में कार्यरत थे। कुछ समय बाद हम लोग भोपाल शहर में आ गए।

सवाल : आप शिक्षक क्यों बने? कैसे बने?क्या इससे पहले कोई और काम भी किया?

प्रमिला जी– मुझे हमेशा से,शादी के पहले से इच्छा थी कि मैं टीचर बनूँगी। शुरू से ही पढ़ाने का शौक था। शादी के बाद बहुत संघर्ष किया। लगभग डेढ़-दो साल के अन्तराल से मेरे चार बच्चे हो गए। चार छोटे-छोटे बच्चों को सम्भालना, घर में कमाने वाला एक और हमारा बड़ा-सा परिवार था। बच्चे बड़े होने लगे तो उनकी पढ़ाई का खर्च और बहुत सारी मुश्किलों के बीच दिन बीते। फिर, शादी के बहुत साल बाद, जब मेरे बच्चे कुछ सँभल गए, तब मैं टीचिंग लाईन में आई। मौका मिला और ज़रूरत भी थी– इस तरह मैं टीचर बन गई। मुझे बहुत खुशी हुई कि भाग्य ने मेरा साथ दिया पर यह आसान नहीं था। बहुत कोशिश करने के बाद टीचरशिप में चयन हुआ– जहाँ तक याद पड़ता है 1982 में। इसके पहले मैंने घर से बाहर कोई काम नहीं किया था। शिक्षा क्षेत्र में काम मिलने पर मैंने भगवान को बहुत धन्यवाद दिया। मेरे जीवन में अचानक बड़ा परिवर्तन आया।

सवाल : स्कूल में पढ़ाने के कुछ खट्टे-मीठे अनुभव याद आते हैं क्या?

प्रमिला जी– शिक्षा विभाग ज्वाइन करने के बाद 82 से 84 मेरी ट्रेनिंग हुई। 85 में मेरा अपाइंटमेंट हुआ– नीलबड़ में। पहले कुछ साल मैंने नीलबड़ के आगे एक गाँव में पढ़ाया। यहाँ प्राथमिक और माध्यमिक दोनों विभाग थे। शुरू में मुझे बहुत दिक्कतें आईं। कुछ सालों बाद मेरी कठिनाइयाँ दूर हुईं।

सिक्युरिटी लाइन वाले स्कूल में आई मैं 85 में– या 86 में। वहाँ मुझे मिडिल स्कूल मिला। मिडिल स्कूल में मैंने कक्षा छह और कक्षा सात को पढ़ाया। उस समय मुझे सामाजिक अध्ययन और हिन्दी मिला। मैंने ये दोनों विषय पढ़ाए। आठवीं नहीं लिया था, सिर्फ कक्षा छह और कक्षा सात ली। वहाँ के स्टुडेंट्स का डिसिप्लिन बहुत अच्छा था। हमारी हेड-मिस्ट्रेस बहुत अच्छी थीं। बहुत डिसिप्लिन वाली थीं। टाइम पर आना, टाइम पर जाना। वो हमेशा राउण्ड लेती थीं और चेक करती थीं।

हमारी एक मैडम थीं– इंग्लिश की। वो रिटायर हो गईं– जोशी मैडम। रिटायर होने के बाद वो विषय मुझे मिला। सर्विस शुरू होने के कोई दस साल बाद मुझे अंग्रेजी पढ़ाने का अवसर मिला। क्योंकि मैं महाराष्ट्र से पढ़ी थी,तो मेरी इंग्लिश अच्छी थी। और बच्चे मुझसे थोड़ा डरते थे क्योंकि मैं उनसे स्ट्रिक्ट रहती थी।

हमारे स्कूल में अच्छे, पढ़े-लिखे घर के बच्चे, क्वार्टर्स के बच्चे और अन्नानगर झुग्गी-झोपड़ी के बच्चे आते थे। उनको इंग्लिश बहुत मुश्किल पड़ती थी। ये बच्चे अँग्रेज़ी के प्रश्नोत्तर, स्पेलिंग वगैरह याद नहीं कर पाते थे। फिर मैंने देखा कि बच्चे कहाँ गलती करते हैं। मेरे मन में एक सुझाव आया क्यों न इन्हें शार्टकट समझाया

जाए। मैंने पहले हू, वॉट, वेन, वेयर का अर्थ समझाया— कि ये चीजें कब लगती हैं। इनके प्रश्नों के उत्तर सरल होते थे। तो जैसे, वेयर यानी कहाँ— तो स्थान का नाम लिख देना। वेन यानी कब, तो समय लिख देना। वाय यानी क्यों। तो इसमें जवाब मुश्किल पड़ जाता था। इसलिए वो नहीं कर पाते थे। और वॉट में क्या। तो क्या का जवाब लिखना। हू यानी कौन, तो जवाब में नाम लिखना। सबसे पहले नाम लिखना और फिर बाकी का संटेन्स वही रहेगा। ऐसी तीन-चार चीज़ों में मैंने बहुत ध्यान दिया। तो बच्चों ने भी बहुत ध्यान दिया और उन्हें समझ में भी आया। धीरे-धीरे वे प्रश्नोत्तर याद करना सीख गए।

बाद में मैंने निबन्ध जो सरल होते थे वे याद कराना सिखाया। इसके बाद पत्र लिखना एवं सरल ग्रामर सिखाई। बच्चों के पीछे पड़कर उनको सिखाया। मैं तीन निबन्ध उनको कम्पलसरी याद करा देती थी। लेटर, जैसे सिकनेस का, या मैरिज का, ऐसे तीन तरह के। और फिर ग्रामर में जैसे प्रीपोजीशन, जोड़ने के लिए इस्तेमाल होता है— कंजेक्सन और भी चीज़ें— ये सब मैं याद करा देती थी।

इस तरह बच्चों में कॉनफिडेंस आया। मेरा रिज़ल्ट इतना अच्छा आया कि बहुत सारे बच्चे 100 में से 80 बच्चे पास हो गए। तो हमारे हेड-मास्टर को बहुत अच्छा लगा। वो कहते थे— मैडम आप बहुत अच्छा इंग्लिश पढ़ाती हैं। अनायस मेरा एक्सीडेंट हुआ। शाला मेरे घर से दूर थी और इस कारण मैंने घर के पास यहाँ ट्रांसफर करा लिया। मेरे हेडमास्टर ने मुझे जाने से बहुत रोका पर मेरी मज़बूरी थी। 2003, में मैं शासकीय संजय गाँधी में आई। यहाँ मुझे प्राइमरी विभाग मिला। शुरू में मैंने पाँचवीं कक्षा पढ़ाई। मैंने बच्चों को अनुशासित किया। बच्चे मेरा कहना मानते थे, डरते भी थे। रिज़ल्ट अच्छा आया। इस तरह मेरी टीचिंग के 33 साल काफी अच्छे रहे।

सवाल : तो सिक्युरिटी लाइन के बच्चे जो आपको याद आते हैं, कौन से बच्चे याद आते हैं और क्यों याद आते हैं?

इसलिए याद आते हैं क्योंकि उन बच्चों का मुझसे बहुत लगाव हो गया था। लगाव के साथ-साथ वो बहुत प्रोत्साहित होते थे और प्रोत्साहित करते भी थे मुझे कि मैडम आपने बहुत अच्छा पढ़ाया, और आपकी बहुत याद आती रहेगी। अभी भी वो बच्चे कभी कहीं न कहीं मिलते हैं, तो पैर छूते हैं, याद करते हैं।

एक्सीडेंट के बाद जब मैं यहाँ आई तो हेडमास्टर साहब बहुत कहते थे कि नहीं मैडम, हम आपको जाने नहीं देंगे। मैंने कहा कि सर मैं मजबूरी से जा रही हूँ क्योंकि दो मिनी बस बदलकर आना और बीच में चलना अब मुझसे होता नहीं है।

इसलिए जब मेरा ट्रांसफर यहाँ इस स्कूल में हो गया, तो यह घर के पास था। तो मैंने यहाँ जॉइन कर लिया। आखिरी दिन सब लोग बहुत भावुक हो गए थे— पूरा स्टाफ। आज भी वहाँ का पूरा स्टाफ मुझे याद करता है।

सवाल : कक्षा में अनुशासन की आप क्या ज़रूरत समझती हैं? और शिक्षा से इसका क्या सम्बन्ध है? आजकल जो बच्चों की पिटाई पर रोक लगी है, उसके बारे में आप क्या सोचती हैं?

प्रमिला जी— पहले के बच्चे अनुशासित थे। शिक्षकों का आदर करते थे। अनुशासन में रहते थे। पढ़ाई पर अधिक ध्यान देते थे। समय पर शाला आते-जाते थे।

बच्चों को मारने पर गवर्मेंट ने जो बैन लगाया है— वो, मैं समझती हूँ कि सही भी है, और नहीं भी। क्योंकि बच्चों के साथ थोड़ा-सा अनुशासन तो होना चाहिए। क्योंकि बच्चे ना...थोड़ा डर से, टीचर के डर से थोड़ा अनुशासित होते हैं। अब क्या है— डर बिल्कुल नहीं है। सोचते हैं कि टीचर हमारा क्या कर लेंगे। हम शिकायत कर देंगे। तो इनके दिमाग में वो बात आ गई है कि मुझे मैडम मारेगी, कुछ करेगी या दण्ड देगी तो हम डाइरेक्ट शिकायत कर देंगे। तो आज के बच्चों के मन में यह भर गया है। मैडम लोग डरते हैं। अगर बच्चे उधमकर रहे हैं तो टीचर कुछ नहीं कर सकते। इतना ही बोल सकते हैं कि चुपचाप जाओ, बैठो। कई बच्चे तो इतने उद्दण्ड होते हैं कि डाँटने से भी नहीं मानते। उनका क्या करें। मतलब दोनों तरफ मैडम लोगों

के लिए मुश्किल हो गई है न। बन्धन हो गया है कि करें तो क्या करें। आप देखते ही हो कि आए दिन पेपरों में आ रहा है। तो इसके अन्दर हम क्या करें। कुछ नहीं कर सकते। टीचर तो सरकार के अंडर में हैं। इसलिए बच्चे उद्दण्ड होते जा रहे हैं।

सवाल : अपने साथी शिक्षकों के साथ हुए किसी अनुभव के बारे में बताइए।

प्रमिला जी– उस समय मैं मिडिल शाला सिक्युरिटी लाईन में शिक्षिका थी। मुझे छठवीं एवं सातवीं कक्षा में पढ़ाने का अवसर मिला। मैं गणित एवं सामाजिक अध्ययन पढ़ाती थी। मुझे गणित नहीं आता था। अपने पुराने समय में मैंने तोला-माशा-रत्ती में पढ़ा था तो गणित विषय मुझे बहुत कठिन लगता था।

एक हमारी मैडम थी... लाल मैडम। साउथ की थीं। वो आठवीं कक्षा की मैथ्स की टीचर थीं। मैंने उनसे छठी का गणित (बीज गणित) सीखा। मैं कहती, मैडम मुझे गणित सिखाओ। मुझे गणित पढ़ाने में बहुत रुचि आ रही है पर कठिन लगती है। वो मुझे एक-एक करके सब बतातीं कि– ऐसा-ऐसा होता है। तो ऐसे पूछ-पूछ के मैं पढ़ाती थी। इस तरह मुझे बहुत अच्छा लगने लगा यह विषय।

सवाल : आपको अपने शिक्षकीय कार्यकाल में किस-किस तरह के प्रशिक्षण मिले? ये प्रशिक्षण कैसे थे? आपके काम के लिए किस तरह से उपयोगी लगे? आपके समय के प्रशिक्षण और अभी आपके पास आने वाले डी.एड. छात्राओं के प्रशिक्षण में आप क्या अन्तर देख पाती हैं?

प्रमिला जी– शिक्षण काल में मैंने कई प्रशिक्षण लिए-अँग्रेज़ी, हिन्दी, सामाजिक अध्ययन आदि। प्रशिक्षण अच्छे लगे। शिक्षण को रोचक और सरल विधि द्वारा समझाने का सुझाव मिलता है। नई-नई बातों को समझने का मौका मिलता है। मेरे समय की पढ़ाई एवं आज की पढ़ाई में बहुत फ़र्क था। पहले की पढ़ाई आसान थी। जल्दी याद कर लेते थे। आज के बच्चों का मन पढ़ाई में कम मोबाइल एवं टीवी में अधिक लगता है। समय के साथ-साथ बहुत बदल गया है– खान-पान, रहन-सहन, घूमना-फिरना आदि...। आजकल डी.एड. अलग हटकर होने लगा है। नये-नये विषयों पर चर्चा होती है। प्रायोगिक विधि पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। पुस्तकें भी प्राइमरी स्तर की प्रायोगिक हो गई हैं। पहले पढ़ने और लिखने पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता था, जो आजकल कम है। अब सरल विधि से, खेल-खेल में पढ़ाना बताया जाता है। बच्चों को भी यह रोचक लगता है। वे जल्दी सीख जाते हैं। हमारे पास आने वाली डी.एड. की छात्राओं को यही कहूँगी कि वे बच्चों को लगन से, रोचक ढंग से और ईमानदारी से पढ़ाएँ।

सवालः आपको प्रधान पाठिका (HM) के तौर पर कितना प्रशासनिक कार्य करना पड़ता है ? यह काम आपको कैसा लगता है? क्या इस काम के लिए किसी प्रकार के सहयोग की ज़रूरत महसूस करती हैं?

प्रमिला जी– प्रधान पाठिका के तौर पर मुझे ढेर सारा प्रशासनिक काम करना पड़ता है। बैंक के काम, संकुल केन्द्र, जन शिक्षा केन्द्र, डाइट आदि जाना, फॉर्म-प्रपत्र आदि लाना, भरना, छात्रवृत्ति, आधार लिंक करना, मूल्यांकन जैसे कितने ही काम करने पड़ते हैं। समय पर बच्चों की क्लास भी लेती हूँ। बाहर मीटिंग, ट्रेनिंग में जाना पड़ता है। शिक्षा विभाग से आई डाक (प्रपत्र) भरकर जमा करना पड़ता है।

इन सब कामों में यदि कार्यालयीन सहयोग मिलता तो अच्छा होता। काम बहुत ज़्यादा है। मैं प्रधान पाठिका बनी थी क्योंकि वेतन में वृद्धि होती और कोई अन्य था भी नहीं, परन्तु उसकी तुलना में काम बहुत ज़्यादा है। फिलहाल हम सब शिक्षिकाएँ मिलकर ही ये सारे काम सँभाल लेती हैं। सभी शिक्षिकाओं का सहयोग मिलता है।

श्रीमती प्रमिला चौहान शासकीय संजय गाँधी प्राथमिक विद्यालय शिवाजी नगर, भोपाल में प्रधान अध्यापिका हैं।

टुलटुल बिस्वास को बालसाहित्य एवं शिक्षा साहित्य के प्रकाशन एवं सम्पादन का लम्बा अनुभव है। वे वर्तमान में एकलव्य भोपाल में कार्यरत हैं एवं शिक्षक-शिक्षा के काम में जुटी हैं।
